धर्मशाला के बारे में

हाल के दिनों में दुनिया के सबसे ऊँचे और खूबसूरत क्रिकेट मैदान के लिए सुर्खियों में रहने वाला धर्मशाला, प्राकृतिक सौन्दर्य का अनमोल नमूना है। कांगड़ा घाटी में हिमालय की धौलाधार पहाड़ियों पर बसे इस बेहद खूबसूरत शहर की तरफ लोग बस यूँ ही खिंचे चले आते हैं। हिमालय की दिलकश, बर्फ से ढकी चोटियां, चारों ओर हरे भरे खेत, हरियाली और कुदरती सुन्दरता, पर्यटकों का मन मोहने के लिए यहां सभी कुछ है। धर्मशाला को तिब्बती धर्म गुरु दलाई लामा का घर भी कहा जाता है। यहां तिब्बती संस्कृति की झलक खूब देखने को मिलती है। इसलिए इसे मिनी ल्हासा भी कहा जाता है। सियासी और धार्मिक एतबार से यहां तिब्बतियों और बौद्धों की संस्कृति है। धर्मशाला की ऊंचाई भी हिमाचल प्रदेश के दूसरे शहरों से ज्यादा है। प्रकृति की गोद में शांति और सुकून से कुछ दिन बिताने के लिए यह बेहद अच्छी जगह है। शहर बहुत छोटा है इसलिए आप टहलते घूमते इसकी सैर दिन में एक नहीं कई बार भी कर सकते हैं।

कैसे पहुंचें

धर्मशाला आने के लिए गग्गल सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है। यह शहर से 14 किलोमीटर दूर है। पठानकोट नजदीकी रेलवे स्टेशन है। पठानकोट से कांगड़ा के लिए छोटी लाइन की तकरीबन 94 किलोमीटर लम्बी रेल है। यहां से धर्मशाला सड़क मार्ग से 17 किलोमीटर है। इसके अलावा दिल्ली (520 कि. मी.) चंडीगढ़, (250 कि. मी.) जम्मू, (210 कि. मी.) शिमला, (238 कि. मी.) चंबा, (185 कि. मी.) और मनाली, (240 कि. मी.) से नियमित बस सेवा भी धर्मशाला के लिए है।

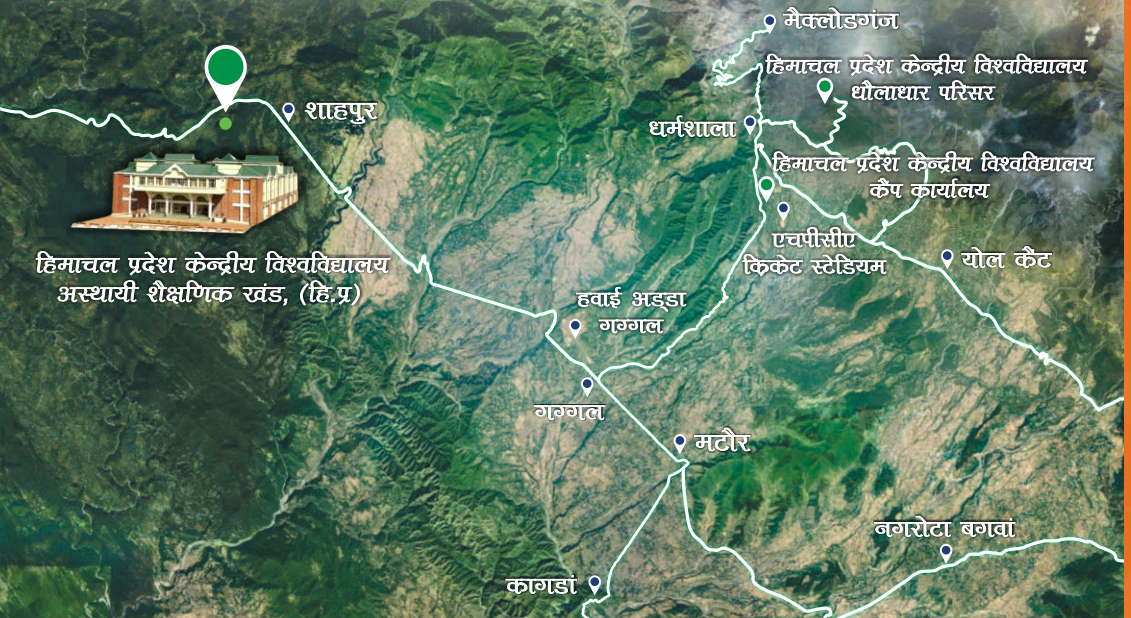

राष्ट्रीय संगोष्ठी

जम्मू-कश्मीर : एक नव विमर्श

Jammu Kashmir: A New Discourse

09-11 अक्तूबर, 2015

सहयोग

जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र

संगठन सचिव

प्रो॰ अरविन्द अग्रवाल

अधिष्ठाता, ललित कला एवं कला शिक्षा स्कूल

सहसचिव

डॉ॰ सुमन शर्मा

सहायक प्रोफेसर, पर्यटन, यात्रा एवं आतिथ्य प्रबंधन स्कूल

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, (हि.प्र)

दूरभाषः +91 1892 237285

फैक्सः +91 1892 237286

ईमेलः suman.sharma@cuhimachal.ac.in

वेबसाइटः www.cuhimachal.ac.in

आयोजक संस्थान के विषय में

प्रारंभ एवं स्थापना

विश्वविद्यालय की स्थापना भारतीय संसद द्वारा पारित केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 (2009 का क्रमांक 25) के अन्तर्गत की गई है।

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय सर्वसुलभ और उत्कृष्ट उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए प्रयत्नशील है जिससे कि उपलब्ध पाठयक्रमों, पाठ्यचर्या रुपरेखा, शिक्षण-विज्ञान, अनुसंधान, प्रकाशन और उद्योग जगत से एकीकरण के संदर्भ में विश्व के सर्वोतम विश्वविद्यालयों के समरुप देश का श्रेष्ठ विश्वविद्यालय बन सके।

संगोष्ठी के बारे में

जम्मू कश्मीर राज्य के भूगोल के आधार पर पांच संभाग हैं। जम्मू, कश्मीर, लद्दाख, गिलगित और बाल्तीस्तान। इनमें से अंतिम दो संभाग पाकिस्तान के अवैध कब्जे में हैं और उसका कुछ हिस्सा उसने चीन को भी दे दिया है। जम्मू कश्मीर में भी अन्य राज्यों की तरह अनेक समस्याएं हैं। खासकर गिलगित और बाल्तीस्तान में वहाँ के निवासियों पर विदेशी सरकार एक प्रकार से दमन की नीति का पालन कर रही है। इसे जम्मू कश्मीर राज्य का दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि जब भी वहां की समस्याओं पर चर्चा हुई है तो वह किसी न किसी एक संभाग या समुदाय को केंद्र में रखकर ही हुई है । जम्मू कश्मीर के भीतर की समस्याओं का एकात्म रूप से बहुत कम विचार हुआ है। प्रस्तावित सेमिनार इसी दिशा में उठाया गया एक कदम है। जम्मू कश्मीर का इतिहास पिछले तीन-चार सौ सालों का ही इतिहास नहल्र है बल्कि उसकी हजारों साल की एक लम्बी परम्परा रही है। राजतरंगिनी इसकी साक्षी है। शैवदर्शन की चर्चा तो कश्मीर के बिना पूरी हो ही नहीं सकती। कश्मीर में शैवदर्शन के पुरोधा अभिनव गुप्त को हुए इस वर्ष हजार साल हो गये हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए सेमिनार कर एक सत्र अभिनव गुप्त को ही समर्पित है। जम्मू कश्मीर में एक मोटे अनुमान के अनुसार गुर्जर जनजाति के लोगों की संख्या 20: तक आंकी जाती है। लेकिन जम्मू कश्मीर पर विचार करते समय गुर्जरों की ओर शायद ही किसी का ध्यान जाता हो। इसी पूर्ति के लिए सेमिनार का एक सत्र गुर्जरों पर केन्द्रित किया गया है। जम्मू कश्मीर के अंतिम महाराजा हरि सिंह शुरु से ही भारत में ब्रिटिश शासन के विरोधी रहे और इसी कारण उनकी आँख की किरकिरी बने रहे हैं। अब निष्पक्ष विद्वान् भी मानने लगे हैं कि जम्मू कश्मीर को महाराजा हरि सिंह की देन का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए और इस सेमिनार में उसकी शुरुआत की जाएगी। जाहिर है, गिलगित, बाल्तीस्तान पर भी सेमिनार का एक सत्र रहेगा। क्योंकि इसके बिना सेमिनार पूरा नहीं माना जा सकता है।

संगोष्ठी के उपविषय

1. जम्मू कश्मीर का संवैधानिक एवं विधिक विकास
2. जम्मू कश्मीर का गुज्जर समाज- एक विवेचन
3. अभिनव गुप्त- कश्मीर के शैव दर्शन की गुत्थियाँ
4. महाराजा हरि सिंह की जम्मू कश्मीर को देन

शोध पत्र के लिए आमंत्रण

प्रतिभागी एवं शोधकर्ता से उपरोक्त विषयों पर अथवा इनसे सम्बन्धित अन्य उपविषयों में भी किसी विषय पर भी अपना शोध पत्र 30 सितम्बर, 2015 तक suman.sharma@cuhimachal.ac.in पर भेज सकते हैं। शोध पत्र हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत किसी भी भाषा में भेजा जा सकता है।

महत्वपूर्ण तिथियां

सार प्रेषण	शोधपत्र प्रेषण	पंजीयन (रजिस्ट्रेशन)
20 सितम्बर, 2015	30 सितम्बर, 2015	25 सितम्बर तक

पंजीकरण शुल्क

	समय सीमा तक	समय सीमा के बाद
शिक्षक	₹ 2000.00	₹ 2500.00
शोधार्थियों के लिए	₹ 1000.00	₹ 1200.00
परम्परागत शिक्षा संस्थाओं के बाहर के प्रतिभागी	₹ 200.00	₹ 250.00

ड्राफ्ट वित्त अधिकारी, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के नाम बनाएं।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक
प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री (कुलपति)

संरक्षक
प्रो. योगिन्द्र सिंह वर्मा (प्रति कुलपति)

संगठन सचिव
प्रो. अरविन्द अग्रवाल

सह सचिव
डॉ. सुमन शर्मा

सदस्य
प्रो. हंसराज शर्मा, डॉ. मनुकोंडा रवीन्द्रनाथ, डॉ. मनोज कुमार सक्सेना
जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र - आशुतोष भटनागर (निदेशक)